BA-I
Paper - 1
Unit - 4

Date 28/07/20

Page - 1

Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

Meaning of Astika and Nastika
(आस्तिक और नास्तिक का अर्थ)

स्वरूप और पद्धति के दृष्टिकोण से भारतीय दार्शनिक संप्रदायों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। वे दो वर्ग हैं। (i) आस्तिक (ii) नास्तिक। भारतीय विचारधारा में आस्तिक उसे कहा जाता है जो वेद की प्रामाणिकता में विश्वास करते हैं। तथा नास्तिक उसे कहा जाता है जो वेद को प्रमाण नहीं मानता है। इस प्रकार से 'वेदों में आस्था रखने वाला आस्तिक है', तथा वेदों की निन्दा करने वाला नास्तिक है। इस दृष्टिकोण से भारतीय दर्शन के छः दर्शनों को आस्तिक कहा जाता है। वे हैं:- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत। इन दर्शनों को षड्दर्शन कहा जाता है। ये सभी वेद पर आधारित हैं। नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत चार्वाक, जैन, बौद्ध हैं। इनके नास्तिक कहने का मूल कारण यह है कि वे वेद की निन्दा करते हैं।

भारतीय दर्शन
↓
वेद

- आस्तिक (Orthodox)
  - वेदों की प्रामाणिकता स्वीकार्य
  - ↓ षड्दर्शन
  - ↓
  - सांख्य - योग
  - न्याय - वैशेषिक
  - मीमांसा - वेदांत
  - अरविन्द, नव-वेदांती
- नास्तिक (Heterodox)
  - वेदों की प्रामाणिकता अस्वीकार्य
  - (1.) चार्वाक → नास्तिक शिरोमणि
    - वेदों के साथ ईश्वर, आत्मा एवं परलोक का खंडन
  - (2.) बौद्ध
  - (3.) जैन

प्राचीन भारतीय दार्शनिक साहित्य में आस्तिक एवं नास्तिक पदों का अर्थ वेद की प्रामाणिकता पर ही आधारित है। वेद पर आधारित विचारधारा आस्तिक, वेदविरोधी विचारधारा नास्तिक।

Scanned with CamScanner

भारतीय विचारधारा में आस्तिक और नास्तिक शब्द का प्रयोग दूसरे अर्थ में भी होता है। नास्तिक उसे कहते हैं जो ईश्वर का निषेध करता है और आस्तिक उसे कहते हैं जो ईश्वर में आस्था रखता है। इस प्रकार से ईश्वरवादी आस्तिक अनीश्वरवादी नास्तिक। व्यवहारिक जीवन में आस्तिक और नास्तिक शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में होता है। दार्शनिक विचारधारा में आस्तिक और नास्तिक शब्द के प्रयोग का आधार वेद है। इस अर्थ में चार्वाक, जैन, बौद्ध के अलावा सांख्य और मीमांसा दर्शन को नास्तिक दर्शन माना जाता है क्योंकि ये सभी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते हैं।

भारतीय दर्शन
↓
ईश्वर

- ईश्वरवादी
  - ↓ ईश्वर की सत्ता स्वीकार्य
  - ↓ न्याय-वैशेषिक, योग और वेदांत
- अनीश्वरवादी दर्शन
  - ↓ ईश्वर की सत्ता अस्वीकार्य
  - ↓ जैन, बौद्ध, चार्वाक, सांख्य, मीमांसा
  - ↓ (सांख्य, मीमांसा) आस्तिक पर अनीश्वरवादी

आस्तिक और नास्तिक शब्द का प्रयोग एक तीसरे अर्थ में भी होता है। जो परलोक अर्थात स्वर्ग नरक की सत्ता में विश्वास करता है वह आस्तिक है, तथा जो परलोक की सत्ता में विश्वास नहीं करता है वह नास्तिक है। इस अर्थ में केवल चार्वाक ही नास्तिक रहेगा। जैन-बौद्ध वेद एवं ईश्वर को न मानते हुए परलोक की सत्ता में आस्था रखते हैं।

भारतीय दर्शन
↓
परलोक
↓

- परलोक की सत्ता में विश्वास
  - जैन, बौद्ध, न्याय-वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा-वेदांत
- परलोक की सत्ता का खंडन
  - (i) चार्वाक

भारतीय दर्शन की उपरेखा यह प्रमाणित करती है कि आस्तिक और नास्तिक शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में होता है। वेद ही वह कसौटी है जिसके आधार पर आस्तिक और नास्तिक का निर्धारण होता है। न्याय-वैशेषिक सांख्य-योग और मीमांसा-वेदान्त दो अर्थों में आस्तिक कहा जाता है क्योंकि ये वेद की प्रमाणिकता में विश्वास करते हैं साथ ही परलोक की सत्ता में भी विश्वास करते हैं। चार्वाक जैन, बौद्ध ये भी दो अर्थों में नास्तिक कहा जाता है। ये वेद की प्रामाणिकता में विश्वास नहीं करते साथ ही ईश्वर की सत्ता का खंडन या अनीश्वरवाद को अपनाते हैं।

चार्वाक ही एक ऐसा दर्शन है जो तीनों अर्थों में नास्तिक है। वेद को अप्रमाण मानने के कारण नास्तिक। ईश्वर की सत्ता का खंडन करने के कारण नास्तिक। परलोक की सत्ता में विश्वास नहीं करने के कारण भी यह नास्तिक है। इस प्रकार से सभी दृष्टिकोण से चार्वाक पक्का नास्तिक दिखता है। इसलिए चार्वाक को 'नास्तिक शिरोमणि' की उपाधि दिया जाता है।

Scanned with CamScanner